श्री नरेन्द्र मोदी जी
भारत वासियों के अत्यंत प्रिय व माननीय प्रधान मंत्री जी
नई दिल्ली, भारत |

विषय: यमुना का निर्मल व शुद्ध जल प्रवाह जन-साधारण, वन्य-जीवन एवं ब्रज-वृन्दावन तक पहुँचाने के लिए १५ मार्च २०१५ को कोसी (ब्रज) से दिल्ली तक निर्णायक एवं ऐतिहासिक पदयात्रा के सन्दर्भ में |

यमुना नदी से जुड़े कुछ तथ्य:

- यमुनोत्री से कुछ दूर ही हरियाणा में हथिनी कुंड बैराज पर सारा यमुना जल खींच लिया जाता है और फिर **सूखे नदी तल** पर दिल्ली अपना अर्ध शोधित मल-मूत्र डालता है |
- दिल्ली, मथुरा, वृंदावन और आगरा में यमुना नदी तल पर बहता है केवल और **केवल मल-मूत्र** (नदी में यमुनोत्री के शुद्ध एवं निर्मल प्राकृतिक जल की एक बूंद भी नहीं) |
- यमुना नदी के तटीय क्षेत्र में रहने वाले लगभग २३% **बच्चों** के रक्त में **उच्च स्तर में सीसा** (लेड) की मात्रा पाई गई है | यह सर्वे UNICEF ने TERI जैसी विश्वसनीय संस्था से करवाया।

यमुना मुक्तिकरण अभियान की प्रमुख मांगें :

1.भारतवर्ष का प्रत्येक जन-साधारण जानता है कि **घातक प्रदूषण** व **निर्मल जल के अभाव** में करोड़ों हिन्दुओं की धार्मिक व पर्यावरणिक आस्था की केंद्र यमुना नदी मृत हो गई है | दिलचस्प बात ये है कि **भारतीय सरकार** के विभिन्न मंत्रालयों व विभागों ने स्वयं ये घोषित किया है कि यमुना नदी को जीवंत करने के लिए मूल पर्याप्त पारिस्थितिक व निर्मल जल के प्रवाह की आवश्यकता है | यहाँ तक कि **उच्चतम न्यायालय व भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थानों (IIT)** के विशेषज्ञों का भी यही कहना है |
किसी भी मूल्य पर नदी के जीवित रहने के लिए न्यूनतम प्राकृतिक व पारिस्थितिक प्रवाह बनाय रखना आवश्यक है | ऐसा हर नदी के लिए चाहिए |

2.किसी भी मात्रा में किया गया संशोधन नदी में निर्मल जल के गुण नहीं ला सकता |
दिल्ली की बहुप्रचारित एवं महंगी इंटरसेप्टर सीवरेज परियोजना भी नदी को क्लास C स्नान गुणवत्ता (जैव रासायनिक ऑक्सीजन की मांग – ३ मिलीग्राम प्रति लीटर) तक बहाल नहीं कर सकती, जोकि उच्चतम न्यायालय द्वारा आदेशित है |

वर्तमान में दिल्ली में यमुना नदी तल को केवल मल-मूत्र को आगरा नहर तक पहुँचाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है | **हमारी दूसरी माँग है कि दिल्ली में यमुना के सहारे-सहारे एक नाले का निर्माण हो जिसमें सारे नाले (प्रदूषण शोधित या अशोधित) गिरें जो अभी यमुनाजी में गिरते हैं | यह परियोजनाएं सरकार द्वारा ही बनाई गयी थीं। इससे यमुनाजी का अधिकांश प्रदूषण दूर हो जाएगा। जो काम अभी यमुना तल से लिया जा रहा है, वह काम यह नया नाला करेगा].**

यमुना नदी, जो हमारी अनादि सभ्यता का अभिन्न अंग है, न केवल एक पेय जल का संसाधन है, एक सांस्कृतिक धरोहर है, अपितु एक आराध्या हैं जिनका हमारी संस्कृति में माँ की तरह पूजन होता है | प्रतिवर्ष करोड़ों धार्मिक व श्रद्धावान भक्तजन **वृन्दावन, मथुरा, आगरा और गोकुल** आते हैं (सरकारी आंकड़े : २०१० में १ करोड़ १३ लाख लोग) | बड़े ही शर्म की बात है कि वे सब कुत्सित जल से स्नान एवं पान करते हुए ठगे जा रहे हैं क्योंकि उन्हें ये पता ही नहीं कि यमुना में केवल मलिन नालियों का घातक जल है | **उनकी धार्मिक भावनाओं और विश्वास को धोखा दिया जा रहा है|**

हम, निम्न हस्ताक्षरकर्ता, 15 मार्च 2015 की कोसी से दिल्ली यमुना मुक्तिकरण पदयात्रा व इसकी न्यायोचित मांगों का पूर्ण रूपेण समर्थन करते हैं | हम चाहते हैं कि आप **पूरे यमुना तल पर (यमुनोत्री से लेकर इलाहबाद तक) पर्याप्त मात्रा में यमुनोत्री का शुद्ध निर्मल व शुद्ध जल (बिना किसी शोधित अथवा अशोधित गंदे जल के मिश्रण के) प्रवाहित करने की व्यवस्था करें** | ऐसा करने से उसका अनियंत्रित प्रदूषण दूर किया जा सकता है और यमुना का निर्मल प्रवाह जन-साधारण, वन्य-जीवन एवं पारिस्थितिकी के लिए उपलब्ध हो जाएगा |

करोड़ों वैष्णवों की भावनाओं के समर्थन में

(हस्ताक्षरकर्ता का नाम व पता)

प्रतिलिपि:

१. भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश
२. माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री
३. माननीय जल संसाधन एवं गंगा जीर्णोद्धार मंत्री